औषधगण मीमांसा

Analytic Study of Aushadha-gana

राजेन्द्र प्रसाद पूर्विया

SCIENTIFIC PUBLISHERS

औषधगण मीमांसा

Aushadhã-Gãnã Mimañsha

(Analytical Study of Aushadha-Gana)

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पूर्विया

M.D., Ph.D. (Dravyaguna)

सहायक प्रोफेसर

स्नातकोत्तर द्रव्यगुण विज्ञान विभाग

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ आयुर्वेद

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय

जोधपुर

साईन्टिफिक

पब्लिशर्स

प्रकाशक
साईन्टिफिक पब्लीशर्स (इण्डिया)
जोधपुर

5-ए, न्यू पाली रोड, पो. बा. नं. 91
जोधपुर-342 001 (राज.)
टेलिफोन : 0291-2433323
E-mail : info@scientificpub.com

© 2019, लेखक

समस्त अधिकार आरक्षित है इस प्रशासन अथवा इसमें प्रस्तुत रूपान्तरित संक्षिप्त अनुवादित या भण्डारित पुन: प्राप्य प्रणाली, कम्प्यूटर प्रणाली, छाया चित्रांकन या अन्य पद्धतियों में अथवा किसी भी प्रारूप में संचारित अथवा किसी साधन से इलेक्ट्रॉनिक यान्त्रिकी प्रतिलिपीकरण, ध्वनि अंकन अथवा अन्यथा से प्रकाशन की पूर्व लिखित अनुमति के बिना नहीं की जा सकेगी।

अस्वीकरण- यद्यपि प्रत्येक प्रयास त्रुटियाँ और लोगों को टालने का है यह प्रकाशन इस समझ- बूझ पर है कि न तो सम्पादक (या लेखक) ना ही प्रकाशक ना ही मुद्रक, किसी भी रूप से किसी व्यक्ति के प्रति जिम्मेदार नहीं हो सकेगें। इस प्रकाशन में यदि किसी त्रुटि या लोप के लिये अथवा उस किसी कार्यवाही के लिये ही जो इस कार्य के आधार पर की जाये। कोई असावधानी की विसंगति प्रकाशक के ध्यान में भविष्य के संस्करण में उसके सुधार के लिये लायी जा सकेगी यदि उसका प्रकाशन हो।

व्यापार चिन्ह सूचना- उत्पादन अथवा निगमन नाम, व्यापार चिन्ह अथवा पंजीकृत व्यापार चिन्ह हो सकेगें और उसका उपयोग उल्लंघन, के इरादे के बिना केवल पहचान या स्पष्टीकरण के लिये किया जा सकेगा।

ISBN: 978-93-88043-78-6 [P/B]
ISBN: 978-93-88043-79-3 [E/B]

Visit the Scientific Publishers (India) website at
http://www.scientificpub.com
भारत में मुद्रित

मंगलाचरण

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम्॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
ऊर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

समर्पण

पूज्यपाद स्व. **माँ** जिनके वात्सल्य एवं ममत्व के प्रसाद से
मेरा समस्त अस्तित्व आप्लावित है,
के
चरणारन्विद में सादर सानुनय
''***औषधगण मीमांसा***''
उनके पावन सदाचरण सत्यनिष्ठ,
सारल्य की साक्षात् मूर्ति को सुवासित करने हेतु
नमन पूर्वक समर्पित।

– राजेन्द्र

Vaidya Prof. Mahesh Chandra Sharma
M.D., PhD. (Ayuarveda), M.A. Sanskrit
Former Director - National Institute of Ayurveda, Jaipur
SBLD Ayurveda Vishwabharti, Sardarshar
Former President - Shri Krishna Gopal Kaleda Ayurveda Trust, Ajmer

वाक्प्रशस्ति

व्यष्टि एवं समष्टिगत आयुर्वेद की सर्वोपकारकता सुप्रसिद्ध है। ''जगद्धिताय'' की कामना से आयुर्वेद के दिव्यज्ञान की पुण्यसलिला स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुयी और त्रिविध तापसंतप्त प्राणिमात्र ने इस दिव्य सुरसरी में अवगाहन कर परमससौख्य रूप पुण्य को प्राप्त किया।

भिषक्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्ट्यम्।

इस उक्ति के अनुसार चिकित्सक, औषध, परिचारक और रोगी ये चार चिकित्सा के सुदृढ़ चरण है। इनमें भी औषध, चिकित्सा का साध्य और साधन दोनों हैं।

नानौषधिभूतं जगति किञ्चिद् द्रव्यमुपलभ्यते।

इस उक्ति के अनुसार औषध का क्षेत्र अति विस्तृत है। इस स्थिति में सुविस्तीर्ण औषध का ज्ञान अत्यन्त दुरुह है एवमेव उनके अन्त:विभाजन यथा गुण, रस, वीर्य, विपाक, अवस्थागतभेद इत्यादि विषयों का वर्गीकृत अध्ययन भी अत्यन्त श्रमसाध्य एवं भ्रमपूर्ण है। औषधज्ञान को सुगम रीति से हृदयस्थ करने हेतु डॉ. सर्वपल्ली राधकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पूर्विया ने अपने अथक् परिश्रम से ''औषधगण मीमांसा'' का यह कलेवर प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ के सात अध्यायों में डॉ. पूर्विया ने विभन्न संहिताओं एवं उनके टीकाकारों के अनुसार औषधगण परिचय का स्थूल एवं सूक्ष्म वर्गीकरण, मिश्रकवर्ग, द्रव्यगुण से सम्बद्ध विविध विषय यथा- अग्रयवर्ग, प्रतिनिधिद्रव्य, द्रव्यशोधन, आर्द्र एवं शुष्कावस्था में द्रव्यों के गुणधर्म आदि विषयों का सांगोपांग विवेचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

यह ग्रन्थ न केवल आयुर्वेद के शोधार्थियों के लिए अपितु आयुर्वेदेतर विज्ञानवर्ग की विविध शाखाओं के शोध अध्येताओं एवं सुधी पाठकों को लाभान्वित करेगा ऐसी मेरी दृढ़ धारणा है।

पुन: औषधविज्ञान के क्षेत्र में इतनी विस्तृत एवं वैविध्यपूर्ण विषयसामग्री के वैज्ञानिक एवं विवेचनापूर्ण प्रणाली से प्रस्तुति हेतु मैं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पूर्विया को अशेष एव अनन्त शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूँ।

प्रो. महेश चन्द्र शर्मा

पूर्व निदेशक एवं विभागाध्यक्ष,
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

41/48, Varun Path, Mansarovar, Jaipur - 302020
E-mail : mahesh_nia@yahoo.com, rasayanayu@gmail.com
Ph.: 0141-2395484, 9414047418

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय
Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Rajasthan Ayurved University
जोधपुर - 342 037 / Jodhpur-342 037

Prof. (Dr.) Radhey Shyam Sharma
Vice-Chancellor

वाक्प्रसून

ॐ जीवेम शरदः शतम्। पश्येमः शरदः शतम्।

स्वस्थायुष्य प्राणिमात्र की कामना है तथा इस सृष्टि पर सर्वश्रेष्ठ प्राणी होने के कारण उस आयुष्य का समुन्नत उपभोग और पारलौकिक निःश्रेयसात्मक प्राप्ति का ध्येय प्रत्येक मनुष्य करता है। शास्त्रों में कहा भी गया है **"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।"** अर्थात शरीर ही धर्म का प्रथम सोपान है क्योकि लोक से परलोक की प्राप्ति की यात्रा का अवलम्बन शरीर है। मानव जीवन को परम ध्येय के प्रापक सर्व साधनों में अपनी प्रत्यक्षकारिता के कारण आयुर्वेद सर्वोपरि है। आयुर्वेद दो प्रयोजन बताये गये हैं–

"प्रयोजनं चास्यं स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य विकारप्रशमनं च।"(चरक)

आयुर्वेद का प्रथम प्रयोजन स्वस्थ–व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा अपर प्रयोजन आतुर–व्यक्ति के विकार का प्रशमन है। प्रथम प्रयोजन की सिद्धि के लिए आचार्यों ने दिनचर्या, ऋतुचर्या, पथ्याहार–विहार की विवेचना की है दैववशात् रोगोत्पत्ति होने पर रोगार्त्त की प्राणरक्षा हेतु चिकित्साकर्म का प्रख्यान किया गया है तथा रोगों के उत्पन्न होने पर द्वितीय प्रयोजन रोगों के उत्पन्न होने पर इनके निवारण के लिए विभिन्न प्रकार के वानस्पतिक औषधीय द्रव्यों का प्रयोग बताया है। इस संदर्भ में आचार्य चरक ने कहा है कि –

रोगमादौ परीक्षेत ततोऽनन्तरमौषधम्।। (च.सू.20/20)

अर्थात रोगी की परीक्षा के उपरान्त औषधी की परीक्षा का ज्ञान करना आवश्यक है। आयुर्वेद के हेतु लिंग एवं औषधरूप त्रिसूत्रात्मक, शाश्वत एवं पुण्यकारी स्वरूप के प्रमुख स्तम्भ **औषधज्ञान** के अध्ययन पर आधारित **"औषधगण मीमांसा"** नामक इस ग्रन्थ में आयुर्वेद में वर्णित सर्वमहाकषाय, औषधगण, सवौषध द्रव्यों के मिश्रकवर्ग तथा द्रव्यगुण से सम्बन्धित विविध विषयों का ससंदर्भ तथा प्रमाणित पुष्टि सहित वैज्ञानिक विवेचन इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुतिकरण की यह शैली इस ग्रन्थ को विशिष्ट स्वरुप प्रदान करती है।

औषधगण मीमांसा न केवल वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण है प्रत्युत स्नातक, स्नातकोत्तरवर्ग विद्यार्थियों के लिए अत्युपयोगी होने के साथ साथ रोगार्त्त के लिए भी कल्याणकारी सिद्ध होगी ।

प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पूर्विया** ने अथक् परिश्रम और मनोयोग से विषय विवेचन किया है। यह एक अत्यन्त प्रशसंनीय एवं उल्लेखनीय कार्य है। ग्रन्थकार के इस कार्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं साधुवाद।

मकरसंक्रान्ति 2019

(प्रो. डॉ. राधेश्याम शर्मा)
कुलपति

Residence : B-4, Jasol House, Paota 'B' Road, Jodhpur (Raj.)-342 006
Ph. off : 0291-2795301 | Fax : 0291-2795300 | Email : vd.rssharma@gmail.com

आभार प्रदर्शन

परम-पिता परमेश्वर तथा आयुर्वेद के उन महर्षियों को प्रणाम करता हूँ जिन्होनें आयुर्वेद का ज्ञान जन जन तक पहुँचाया। तदुपरान्त मेरे पूज्य प्रात: स्मरणीय माताजी पिताजी के चरणों में कोटिश: वन्दना करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ जिनके त्याग, तपस्या, स्नेह तथा आशीर्वाद ने कदम कदम पर मुझे सम्बल प्रदान किया। विद्वद्शिरोमणि परमपूज्य गुरुवर्य प्रोफेसर बनवारी लाल गौड़ (पूर्वकुलपति, डॉ. एस. आर. राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर), परमपूज्य गुरुवर्य, सिद्धहस्त चिकित्सक प्रोफेसर डा. राधेश्याम शर्मा (कुलपति, डॉ. एस. आर. राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर) का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने मुझे अकथनीय सहयोग दिया तथा ज्ञान-विज्ञान से संपोषित किया।

परमपूज्य गुरुवर, यशस्वी एवं द्रव्यगुण-विषय के मूर्धन्य विद्वान प्रोफेसर महेश चन्द्र शर्मा (पूर्व-निदेशक, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर), निदेशक श्री भंवरलाल दूगड़ आयुर्वेद विश्वभारती, सरदारशहर का अन्त:करण से आभार प्रगट करता हूँ कि आप सभी ने मुझे सदैव पुत्रवत् स्नेह दिया और ज्ञान विज्ञान से सदैव संपोषित किया ।

द्रव्यगुण विषय के निष्णात् विद्वान प्रोफेसर मीता कोटेचा, प्रो. चक्रपाणि शर्मा, प्रो. पी. पी. शर्मा, प्रो. जगदीश प्रसाद शर्मा, प्रो. महेश दाधीच, डॉ. मोहन लाल जायसवाल, डॉ. ए. कु. राममूर्ति का भी अन्त:करण से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने ज्ञान-विज्ञान से मुझे सदैव संपोषित किया ।

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ आयुर्वेद, जोधपुर के प्रोफेसर गोविन्द सहाय शुक्ल (प्राचार्य), प्रो. महेन्द्र कुमार शर्मा (डीन एकेडमी), प्रो. ओमप्रकाश दवे, डॉ. राजेश कुमार शर्मा एवं डॉ. राजाराम अग्रवाल का आभार व्यक्त करता हूँ कि जिन्होनें समय-समय पर यथोचित परामर्श दिया तथा डॉ. चन्दन सिंह, डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा, डॉ. मोनिका वर्मा, डॉ. मनोज अदलक्खा, डॉ. श्योराम शर्मा, डॉ. वी. डी. शर्मा, डॉ. राजेन्द्र दीक्षित, डॉ. कमलेश कुमार

शर्मा, डॉ. गजेन्द्र शर्मा, डॉ. राजेश मिश्रा, डॉ. विजेन्द्र गुप्ता और डॉ. तरुण भाटी का भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ कि जिन्होनें मुझे सदैव मित्रवत् सहयोग प्रदान किया।

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ आयुर्वेद के समस्त शैक्षणिक कर्मचारियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे सहयोग प्रदान किया है।

अग्रज भ्राता श्री लल्लू लाल, श्री प्रहलाद सिंह, श्री ब्रजमोहन, श्री श्याम लाल एवं अनुज गजराज तथा अन्य परिवारजनों का भी मैं आभारी रहूँगा जिनका आशीर्वाद एवं प्यार मुझे निरन्तर प्रोत्साहित करता रहा है। गृहस्थधर्म के निर्वाह करने वाली जीवन-सङ्गनी श्रीमती कल्पना देवी का आभारी हूँ जिन्होनें लेखनकार्य में अकथनीय सहयोग प्रदान किया। सुपुत्र दीपेन्द्र कर्णावत एवं मनीष कर्णावत की बाल क्रीडाऐं श्रान्त व क्लान्त मन को आह्लादित करती रही। अत: वे साधुवाद के पात्र हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ मैसर्स साईन्टिफिक पब्लीशर्स के प्रकाशक श्री पवन कुमार शर्मा एवं श्री तनय शर्मा का भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

अन्त मे सभी ज्ञात एवं अज्ञात विद्वज्जनों का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होनें प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया।

विदुषानुचर:

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पूर्विया

दो शब्द

नमामि धन्वन्तरिमादिदेवं सुरासुरैर्वन्दितपादपद्मम्।
लोकेरुग्भयमृत्युनाशं धातारमीशं विविधौषधीनाम्।।

आदिदेव भगवान धन्वन्तरि जो सुर (देवताओं) और असुर से वन्दित, संसार के जरारोग (वार्धक्य), भय, और मृत्यु से दूर करने वाले जगत के पालक तथा विविध-औषधियों के स्वामी भगवान् धन्वन्तरि को नमन करता हूँ।

ॐ जीवेम: शरद: शतम्। पश्येम: शरद: शतम्।

आयुष्य प्राणिमात्र की कामना है तथा इस सृष्टि पर सर्वश्रेष्ठ-प्राणि होने के कारण उस आयुष्य का समुन्नत उपभोग और पारलौकिक नि:श्रेयसात्मक प्राप्ति का ध्येय प्रत्येक मनुष्य करता है। लोक से परलोक की प्राप्ति की इस यात्रा का अवलम्बन शरीर है। इसलिए कहा गया है कि ***''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।''*** इस अवलम्बन की सबसे बडी बाधा रोग है। धर्मकारकता के मूल आरोग्य की सम्प्राप्ति हेतु करुणा, सागर, तपोनिष्ट, ज्ञानपूत अन्त:करण वाले महर्षियों ब्रह्मप्रदत्त, इन्द्रशासित आयुर्वेद का ज्ञान पृथ्वीलोक पर अवतरित किया गया। दैवप्रदत्त और सार्वभौमिक तथा सार्वलौकिक होने के कारण इस आयुर्वेद को शाश्वत और अनादि कहा गया है।

आयुर्वेद का अर्थ केवल प्राणिमात्र को शरीर को संचित ही नहीं करता अपितु जीवन को अभ्युदय और नि:श्रेयस् की सिद्धि का साधन के रूप में प्रस्तुत करना है। अत: हितायु और दु:खायु के रूप में इसका निर्वचन किया गया है। आयुर्वेद के इसी स्वरूप को दृष्टिगत रखते हुए दो प्रयोजनों का लक्ष्य प्रस्तुत किया गया -

''प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य विकारप्रशमनं च।'' (चरक)

आयुर्वेद का प्रयोजन स्वस्थ-व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा आतुर-व्यक्ति के विकार का प्रशमन हैं। प्रथम प्रयोजन की सिद्धि के लिए आचार्यों ने दिनचर्या, ऋतुचर्या, पथ्याहार-विहार की विवेचना की गयी है दैववशात् रोगोत्पत्ति होने पर रोगार्त्त की प्राणरक्षा हेतु चिकित्साकर्म का प्रख्यान किया गया है। द्वितीय प्रयोजन रोगों के उत्पन्न होने पर इनके निवारण के लिए विभिन्न प्रकार के वानस्पतिक औषधीय द्रव्यों का प्रयोग बताया है। इस हेतु चिकित्सा के चार पाद बताये हैं। इस संदर्भ में कहा है कि -

भिषक् द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्ट्यम्। गुणवत कारणं ज्ञेयं विकारव्युपशान्तये।। (चरक)

इन घटकों में औषधद्रव्य चिकित्सा का करणभूत अंग है। क्योंकि औषधद्रव्यों के अभाव में चिकित्साकर्म सम्भव नहीं है। औषधद्रव्य भी तीन प्रकार के बताये है - जांगमद्रव्य, औद्भिद्द्रव्य और पार्थिवद्रव्य। इन त्रिविध-द्रव्यों में भी औद्भिद् द्रव्यों का प्रयोग अबाध गति से चला आ रहा है।

आचार्य चरक ने इस संदर्भ में लिखा है कि –

''स्वलक्षणः सुखासुखतो हिताहिततः प्रमाणाप्रमाणतश्च; यतश्चायुष्याण्यनायुष्याणि च द्रव्यगुणकर्माणि वेदयत्यतोऽप्यायुर्वेद तत्रायुष्याण्यनायुष्याणि च द्रव्यगुणकर्माणि।''

इसी क्रम में चरकोक्त पञ्चाशत महाकषाय, सुश्रुतोक्त गण एवं अन्य आचार्यों ने बताये गये मिश्रकवर्ग जो स्वास्थ्य के लिए हितकारी तथा विभिन्न रोगों को दूर करने में समर्थ है।

प्रस्तुत कृति में सर्वप्रथम बृहत्त्रयी (चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता और अष्टांगहृदय) एवं अंष्टांगसंग्रह में उल्लिखित महाकषाय एवं गणों में प्रयुक्त द्रव्यो की संदिग्धता का निवारण करने लिए विभिन्न प्रकार की टीकाओं (आयुर्वेददीपिका– चक्रपाणिदत्त, चरकोपस्कार– योगीन्द्रनाथसेन, भानुमति– चक्रपाणिदत्त, निबन्धसंग्रह– डल्हण, जल्पकल्पतरु– गंगाधरराय, सुश्रुतार्थसंदीपन– हारायणचन्द्र, सर्वांगसुन्दरा– अरुणदत्त, आयुर्वेदरसायन– हेमाद्री, शशिलेखा– इन्दु) और निघण्टुओं (धन्वन्तरिनिघण्टु, कैयदेवनिघण्टु, भावप्रकाशनिघण्टु, सोढलनिघण्टु, मदनपालनिघण्टु, राजनिघण्टु, शालीग्रामनिघण्टु और शालीगरामोषधशब्दसागर अर्थात् आयुर्वेदीय–औषधिकोष आदि) का अध्ययन के साथ साथ मेरे गुरुजनों का सहयोग लेकर जिन द्रव्यों की सन्दिग्धता का निराकरण हो सका उनका निराकरण करने का प्रयास किया है। इसमें द्रव्य का मुख्यनाम, लैटिननाम, कुल, रस, गुण, वीर्य, विपाक, दोषकर्म का विवेचन किया गया है तथा विभिन्न–टीकाकारों के मतों के प्रमुख–अंशों को एवं महाकषाय का लक्षण को भी समझाने का प्रयास किया है। संकलनकर्त्ता ने मिश्रकवर्गों को अधिक लोकोपयोगी बनाने के लिए उसकी परिभाषा के साथ साथ इसके गुणधर्म वाले अंशों को विविध संहिताओं और निघण्टुओं से संकलन करके यहाँ पर प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत कृति की विषयवस्तु को सात अध्यायों में विभाजित किया है।

विषयवस्तु विभाजन

प्रथम अध्याय – **दशेमानिविज्ञानीय (चरकोक्तमहाकषाय)** अध्याय में चरकोक्त पञ्चाशतमहाकषाय को स्थान दिया है। इसमें जीवनीयादि कर्मो की परिभाषा के साथ महाकषाय में वर्णित द्रव्यों का मुख्यनाम, लैटिननाम, कुल, रस, गुण, वीर्य, विपाक और दोषकर्म विवेचन चक्रपाणिदत्तकृत– आयुर्वेददीपिका, योगीन्द्रनाथसेनकृत– चरकोपस्कार एवं गंगाधररायकृत– जल्पकल्पटीका का आधार बनाकर किया गया है। इसमें इन टीकाकारों के प्रमुख–अंशों को प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय – **सुश्रुतोक्तगण** को स्थान दिया है। इसमें विदारीगन्धादिगण व अन्यगणों में कहे गये द्रव्यों का मुख्यनाम, लैटिननाम कुल, रस, गुण, वीर्य, विपाक और दोषकर्म और गणों के कर्म का विवेचन डल्हणकृत– निबन्धसंग्रह, चक्रपाणिकृत– भानुमति एवं हारायणकृत– सुश्रुतार्थसंदीपन को आधार बनाकर किया है। इसमें टीकाओं के प्रमुख अंशों का विवेचन किया है।

तृतीय अध्याय – **अष्टांगहृदयोक्तगण** को स्थान दिया है। इसमें गण में उल्लिखित द्रव्यों के मुख्यनाम व लैटिननाम बताये गये है एवं गण की परिभाषा के उपरान्त अरुणदत्तकृत– सर्वांगसुन्दरा तथा हेमाद्रीकृत– आयुर्वेदरसायन के प्रमुख अंशों को स्थान दिया है।

चतुर्थ अध्याय – **अष्टांगसंग्रहोक्तमहाकषाय** को स्थान दिया है। इसमें वाग्भटोक्त 45 महाकषायों का उल्लेख है। महाकषायों में द्रव्यों के मुख्यनाम और लैटिननाम बताये है। इन्दु (शशिलेखा) के वचनो को भी इसमें उद्धृत किया है।

पञ्चम् अध्याय – **अष्टांगसंग्रहोक्तगण** को स्थान दिया है। इसमें वाग्भटोक्त गण में कहे गये द्रव्यों के मुख्यनाम और लैटिनाम बताये है। इन्दु (शशिलेखा) के वचनो को इसमें उद्धृत किया गया है।

षष्ठम् अध्याय – **मिश्रकवर्ग** को स्थान दिया है। इसमें विविध निघण्टुओं में बताये गये मिश्रकवर्ग (गणों) को स्थान दिया है। इसमें मिश्रकवर्ग में कहे गये द्रव्यों के मुख्यनाम, लैटिननाम, गुणकर्म, पर्याय, उपयोग तथा जहाँ पर अपवाद मिलता है उनकों भी बताया गया हैं। इसमें जहाँ तक हो सका वहाँ तक के जितने भी संख्यात्मकवर्गो का विवेचन हैं। उनका यहाँ पर क्रमश: औद्भिद्गण, पार्थिवगण और जान्तवगण अन्तर्गत उल्लेखित किया है।

सप्तम् अध्याय – **विविधविषय** को स्थान दिया है। इसमें अग्रयवर्ग, प्रतिनिधिद्रव्य (योगरत्नाकर, भावप्रकाश एवं भैषज्यरत्नावली के अनुसार), औषध–द्रव्यों में अपमिश्रण, औषध–द्रव्यों का शोधन, औषधमात्रा, निष्कर्षक, औषध–द्रव्यों के प्रमाणित निष्कर्षक (Chemical marker) औषध–द्रव्यों की भस्म–मात्रा और अम्ल में अविलेयता, प्रयोज्यांगविशेष (विभिन्न ग्रन्थों के संकलित), निर्यास–राल आदि प्रयोज्यांग–विशेष, आकृति–विशेष के आधार पर कार्यकारी द्रव्य, कतिपय द्रव्यों के प्रयोग–विशेष, आर्द्र एवं शुष्कावस्था में द्रव्यों के गुणधर्म, नक्षत्र–राशि–ग्रहवृक्ष, प्रमुख निघण्टुओं का संक्षिप्त परिचय, नये वानस्पतिक नाम का विवेचन किया गया है। पादप में उपस्थित विविध पादप रसायनों के अन्तर्गत कार्बनिक एवं अकार्बनिक पदार्थो की उपस्थिति के लिए किये जाने वाले परीक्षणों की विधियों का उल्लेख है।

उक्त विषयवस्तु पीएच.डी, एम.डी. बी.ए.एम.एस., रिसर्चस–स्कोलर, एम.फार्मा और बी.फार्मा आदि पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियो के लिए अति उपयोगी सिद्ध होगी ऐसा मेरा मानाना है।

14 जनवरी, 2019

लेखक
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पूर्विया
(पीएच.डी. एम.डी., बी.ए.एम.एस.)
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ आयुर्वेद
डॉ. एस. आर. राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान)

संकेताक्षर

क्र.	संकेताक्षर	मूलशब्द
1.	अ.हृ.सू.	अष्टांगहृदय सूत्रस्थान
2.	कै.नि./कैय.नि.	कैयदेवनिघण्टु
3.	गणद्र./गण.	गणद्रव्यावली
4.	गं.	गंगाधर
5.	गुडू./गु.	गुडूच्यादिवर्ग
6.	च. द.	चक्रदत्त
7.	चक्र.	चक्रपाणि
8.	च.सू.	चरकसंहिता सूत्रस्थान
9.	च.द.	चक्रदत्त
10.	ध. नि.	धन्वन्तरिनिघण्टु
11.	द्र.वि.	द्रव्यगुणविज्ञान
12.	द्रव्य.सं./द्र.सं.	द्रव्यगुणसंग्रह
13.	नि. आ.	निघण्टु आदर्श
14.	प्रिय नि.	प्रियनिघण्टु
15.	भा.प्र./ भाव. नि.	भावप्रकाशनिघण्टु
16.	भै. रत्ना./भै. र.	भैषज्यरत्नावली
17.	म.पाल/म.पा./म.पा.नि.	मदनपालनिघण्टु
18.	महौ. नि.	महौषधनिघण्टु
19.	यो./योगी.	योगीन्द्रनाथसेन
20.	यो.र.	योगरत्नाकर
21.	र. वै.	रसवैशेषिक
22.	र. चूडा.	रसेन्द्रचूडामणि
23.	र. त.	रसतरंगिनी
24.	रा. नि.	राजनिघण्टु
25.	शा. नि.	शालिग्रामनिघण्टु
26.	शा.सं.	शार्ङ्गधरसंहिता

क्र.	संकेताक्षर	मूलशब्द
27.	सो. नि.	सोढलनिघण्टु
28.	सू.	सूत्रस्थान
29.	सु.सू.	सुश्रुतसंहिता सूत्रस्थान
30.	$BaCl_2$	Barium chloride
31.	$C_{10}H_8O$	ά-Naphthal
32.	C_2H_5OH	Alcohol or Ethanol
33.	$C_6H_3N_3O_7$	Picric acid
34.	C_6H_6	Benzene
35.	$C_6H_8O_7$	Citric acid
36.	$C_9H_4O_3$	Ninhydrine
37.	$CH_2OH.CHOH.CH_2OH$	Glycerol
38.	CH_3COOH	Acetic acid
39.	CH_3OH	Methanol or Methyl alcohol
40.	$CHCl_3$	Chloroform
41.	$(CH_3)_2CO$	Acetone
42.	$(COOH)_2$	Oxalic acid
43.	$(NH_4)_2SO_4$	Ammonium sulphate
44.	$C_6H_4(CH_3)_2$	Xylene
45.	$CH_3(CH_2)_3$ OH	n- Butanol or n-butyl alcohol
46.	$(NH_4)_6MO_7O_{24}$	Ammonium molybdate
47.	Conc.	Concentration
48.	$CuSO_4$	Copper sulphate
49.	D.W	Distilled water
50.	Dil.	Dilute
51.	$FeCl_3$	Ferric chloride
52.	Gm.	Gram
53.	Hb	Haemoglobin
54.	H_2O_2	Hydrogen peroxide
55.	H_2SO_4	Sulphuric acid
56.	HCl	Hydrochloric acid
57.	$HClO_4$	Perchloric acid
58.	HNO_3	Nitric acid

क्र.	संकेताक्षर	मूलशब्द
59.	I_2	Iodine
60.	IR	Infra Red
61.	K_2SO_4	Potassium sulphate
62.	KI	Potassium Iodide
63.	KOH	Potassium hydroxide
64.	KSCN	Potassium thiocyanide
65.	mL	Milli - liter
66.	NaOH	Sodium Hydroxide
67.	NH_3 (L)	Liquid ammonia
68.	NH_4Cl	Ammonium chloride
69.	NH_4OH	Ammonium hydroxide
70.	Ppt.	Precipitate
71.	S	Sulphur
72.	Sol.	Solution
73.	TLC	Thin layer chromatography
74.	TLC	Total leucocytes count
75.	Δ gram	Total gram

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय – **दशेमानि विज्ञान (चरकोक्त महाकषाय)** **1 - 64**

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	जीवनीय महाकषाय	2
2.	बृंहणीय महाकषाय	3
3.	लेखनीय महाकषाय	5
4.	भेदनीय महाकषाय	6
5.	सन्धानीय महाकषाय	7
6.	दीपनीय महाकषाय	8
7.	बल्य महाकषाय	9
8.	वर्ण्य महाकषाय	10
9.	कण्ठ्य महाकषाय	12
10.	हृद्य महाकषाय	13
11.	तृप्तिघ्न महाकषाय	14
12.	अर्शोघ्न महाकषाय	15
13.	कुष्ठघ्न महाकषाय	16
14.	कण्डूघ्न महाकषाय	17
15.	कृमिघ्न महाकषाय	18
16.	विषघ्न महाकषाय	19
17.	स्तन्यजनन महाकषाय	20
18.	स्तन्यशोधन महाकषाय	21
19.	शुक्रजनन महाकषाय	22
20.	शुक्रशोधन महाकषाय	23
21.	स्नेहोपग महाकषाय	24
22.	स्वेदोपग महाकषाय	25
23.	वमनोपग महाकषाय	26
24.	विरेचनोपग महाकषाय	27
25.	आस्थापनोपग महाकषाय	28
26.	अनुवासनोपग महाकषाय	29
27.	शिरोविरेचनोपग महाकषाय	30
28.	छर्दिनिग्रहण महाकषाय	31
29.	तृष्णानिग्रहण महाकषाय	32
30.	हिक्कानिग्रहण महाकषाय	33
31.	पुरीषसंग्रहणीय महाकषाय	34
32.	पुरीषविरजनीय महाकषाय	35
33.	मूत्रसंग्रहणीय महाकषाय	37
34.	मूत्रविरजनीय महाकषाय	38
35.	मूत्रविरेचनीय महाकषाय	39
36.	कासहर महाकषाय	40
37.	श्वासहर महाकषाय	41
38.	श्वयथुहर महाकषाय	42
39.	ज्वरहर महाकषाय	43
40.	श्रमहर महाकषाय	44
41.	दाहप्रशमन महाकषाय	45
42.	शीतप्रशमन महाकषाय	46
43.	उदर्दप्रशमन महाकषाय	47
44.	अंगमर्दप्रशन महाकषाय	48
45.	शूलप्रशमन महाकषाय	49
46.	शोणितस्थापन महाकषाय	49
47.	वेदनास्थापन महाकषाय	51
48.	संज्ञास्थापन महाकषाय	52
49.	प्रजास्थापन महाकषाय	53
50.	वयःस्थापन महाकषाय	54

द्वितीय अध्याय – **सुश्रुतोक्त गण** **65 - 113**

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	विदारीगन्धादि	66
2.	आरग्वधादि	67
3.	वरुणादि	69
4.	वीरतर्वादि	71
5.	सालसारादि	72
6.	रोध्रादि	74
7.	अर्कादि	75
8.	सुरसादि	77
9.	मुष्ककादि	79
10.	पिप्पल्यादि	80
11.	एलादि	81
12.	वचादि	83
13.	हरिद्रादि	84
14.	श्यामादि	84
15.	बृहत्यादि	86
16.	पटोलादि	86
17.	काकोल्यादि	87
18.	ऊषकादि	88
19.	सारिवादि	89
20.	अञ्जनादि	90
21.	परूषकादि	90
22.	प्रियंग्वादि	91
23.	अम्बष्ठादि	92
24.	न्यग्रोधादि	93
25.	गुडूच्यादि	95
26.	उत्पलादि	96
27.	मुस्तादि	97
28.	त्रिफला	98
29.	त्रिकटु	98
30.	आमलक्यादि	99
31.	त्रप्वादि	99
32.	लाक्षादि	100
33.	लघुपञ्चमूल	100
34.	बृहद्पञ्चमूल	101
35.	वल्लीपञ्चमूल	101
36.	कण्टकपंचमूल	102
37.	तृणपंचमूल	102

तृतीय अध्याय – **अष्टांगहृदयोक्त गण** **114 -141**

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	छर्दनादि गण	115
2.	विरेचनादि गण	115
3.	निरूहण गण	116
4.	शिरोविरेचन द्रव्य	116
5.	वातनाशक	116
6.	पित्तनाशक	117
7.	कफनाशक	118
8.	जीवनीय महाकषाय	119
9.	विदारीगन्धादि	119
10.	सारिवादि	120
11.	पद्मकादि	120
12.	परूषकादि	121
13.	अञ्जनादि	121
14.	पटोलादि	121
15.	गुडूच्यादि	122
16.	आरग्वधादि	122
17.	असनादि	123
18.	वरुणादि	123

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
19.	ऊषकादि	123
20.	वीरतर्वादि	124
21.	रोध्रादि	124
22.	अर्कादि	125
23.	सुरसादि	125
24.	मुष्ककादि	126
25.	वत्सकादि	126
26.	वचादि	127
27.	हरिद्रादि	127
28.	प्रियंग्वादि	127
29.	अम्बष्ठादि	127
30.	मुस्तादि	128
31.	न्यग्रोधादि	128
32.	एलादि	129
33.	श्यामादि	129

चतुर्थ अध्याय – **अष्टांगसंग्रहोक्त महाकषाय** **142 -162**

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	जीवनीय महाकषाय	142
2.	बृंहणीय महाकषाय	143
3.	लेखनीय महाकषाय	143
4.	भेदनीय महाकषाय	143
5.	सन्धानीय महाकषाय	144
6.	दीपनीय महाकषाय	144
7.	बल्य महाकषाय	144
8.	वर्ण्य महाकषाय	144
9.	कण्ठ्य महाकषाय	145
10.	हृद्य महाकषाय	145
11.	तृप्तिघ्न महाकषाय	145
12.	अर्शोघ्न महाकषाय	145
13.	कुष्ठघ्न महाकषाय	146
14.	कण्डूघ्न महाकषाय	146
15.	कृमिघ्न महाकषाय	146
16.	विषघ्न महाकषाय	146
17.	स्तन्यजनन महाकषाय	147
18.	स्तन्यशोधन महाकषाय	147
19.	शुक्रजनन महाकषाय	147
20.	शुक्रशोधन महाकषाय	147
21.	स्नेहोपग महाकषाय	148
22.	स्वेदोपग महाकषाय	148
23.	वमिनिग्रहण महाकषाय	148
24.	तृष्णानिग्रहण महाकषाय	148
25.	हिक्कानिग्रहण महाकषाय	149
26.	विड्निग्रहण महाकषाय	149
27.	विड्विरजन महाकषाय	149
28.	मूत्रनिग्रहण महाकषाय	149
29.	मूत्रविरजन महाकषाय	150
30.	मूत्रविरेचनीय महाकषाय	150
31.	कासहर महाकषाय	150
32.	श्वासहर महाकषाय	150
33.	ज्वरहर महाकषाय	151
34.	श्रमहर महाकषाय	151
35.	दाहप्रशमन महाकषाय	151
36.	शीतप्रशमन महाकषाय	151
37.	उदर्दप्रशमन महाकषाय	152
38.	अंगमर्दप्रशम महाकषाय	152
39.	शूलप्रशमन महाकषाय	152
40.	श्वयथुहर महाकषाय	152
41.	शोणितस्थापन महाकषाय	153
42.	वेदनास्थापन महाकषाय	153
43.	संज्ञास्थापन महाकषाय	153
44.	गर्भस्थापन महाकषाय	153
45.	वय:स्थापन महाकषाय	154

पञ्चम अध्याय – **अष्टांगसंग्रहोक्त गण** **162 -183**

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	विदारीगन्धादि	164
2.	सारिवादि	164
3.	पद्मकादि	164
4.	परूषकादि	165
5.	अञ्जनादि	165
6.	पटोलादि	165
7.	गुडूच्यादि	166
8.	आरग्वधादि	166
9.	असनादि	167
10.	वरुणादि	167
11.	ऊषकादि	168
12.	वीरतर्वादि	168
13.	रोध्रादि	168
14.	अर्कादि	169
15.	सुरसादि	169
16.	मुष्ककादि	170
17.	वत्सकादि	170
18.	वचादि	171
19.	हरिद्रादि	171
20.	प्रियंग्वादि	171
21.	अम्बष्ठादि	171
22.	मुस्तादि	172
23.	न्यग्रोधादि	172
24.	एलादि	173
25.	श्यामादि	173
26.	पिप्पल्यादि	174

षष्ठम् अध्याय – **मिश्रकवर्ग** **184 -228**

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	द्विकटु	184
2.	कटूषणा	185
3.	त्रिवल्कल	185
4.	त्रिफला	185
5.	सुगन्धित्रिफला	186
6.	मधुरत्रिफला	186
7.	स्वल्पत्रिफला	187
8.	त्रिकण्टक	187
9.	कण्टकत्रितय	187
10.	कण्टकारीत्रय	184
11.	क्षीरत्रय	188
12.	करंजत्रय/ करंजद्वय	188
13.	यवानीत्रय	188
14.	त्रिसम	189
15.	त्रिमधुर/मधुरत्रय	189
16.	त्रिकार्षिक /चातुर्भद्रक	189
17.	त्रिकटु	190
18.	मध्यमत्रिकटु	190
19.	क्षुद्रत्रिकटु	190
20.	त्रिमद	191
21.	त्रिजाति	191
22.	त्रिसिता	191
23.	त्रिजात/चतुर्जात	192
24.	चतुरूषण	192
25.	कटुग्रन्थिचतुष्क	192
26.	कटुचतुर्जात	193
27.	चतुर्बीज	193
28.	पर्णीचतुष्ट्य	193
29.	चतुरम्ल	194
30.	चातुर्भद्र	194
31.	चातुर्थक	194
32.	बालचातुर्भद्रिका	195
33.	बलाचतुष्ट्य	195
34.	पञ्चकोल	195

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
35.	पञ्चकोल–द्वितीय	196
36.	कण्टकपञ्चमूल	196
37.	वल्लीपञ्चमूल	197
38.	तृणपञ्चमूल	197
39.	पञ्चसुगन्धित	198
40.	पञ्चनिम्ब	199
41.	पञ्चशैरीष	199
42.	पञ्चसार्पक	199
43.	पञ्चक्षीरिवृक्ष	199
44.	पञ्चवल्कल	200
45.	पञ्चभृंग	200
46.	पञ्चगण	201
47.	लघुपञ्चमूल	201
48.	बृहद्पञ्चमूल	202
49.	जीवनीयपञ्चमूल	203
50.	मध्यमपञ्चमूल	203
51.	पञ्चपञ्चमूल	204
52.	पञ्चतिक्त (प्रथम)	204
53.	पञ्चतिक्त (द्वितीय)	204
54.	पञ्चतिक्त (तृतीय)	205
55.	पञ्चपल्लव	205
56.	बलाख्यपञ्चमूल	206
57.	पञ्चबीज	206
58.	पञ्चबीज द्वितीय	206
59.	पञ्चसिद्धौषध	207
60.	औषधी–पञ्चामृत	207
61.	पञ्चामृतयोग	207
62.	पञ्चाम्लक	207
63.	पञ्चाम्लक द्वितीय	208
64.	पञ्चशूरण	208
65.	गोक्षुरादिपञ्चमूल	208
66.	पंचांग–दशांग	209
67.	षडूषण	209
68.	सुगन्धषट्क	209
69.	महासुगन्धषट्क	210
70.	सप्ततर्पण	210
71.	अष्टवर्ग	210
72.	अष्टगन्ध	211
73.	ककाराष्टक	211
74.	दशमूल	212
75.	जीवनीयगण	212
76.	सर्वौषधिगण	213
77.	ककारादि गण	213
78.	वातिकज्वरहरगण	214
79.	पित्तजज्वरहरगण	214
80.	कफजज्वरहरगण	215
81.	सन्निपातहरगण	215
82.	रक्तपित्तहरगण	216
83.	रक्तवातहरगण	216
84.	मधुरवर्ग/गण	216
85.	चक्षुष्य वर्ग	217
86.	रक्तवर्ग	217
87.	पीतवर्ग	218
88.	कृष्णवर्ग	218
89.	सर्वगन्धि	218
90.	आद्यपुष्प/वरार्द्ध	219
91.	परार्ध	219
92.	वाट्यपुष्पक	219
93.	देवकर्दम	219
94.	यक्षकर्दम	219
95.	फलिनी	220
96.	मूलिनी	221
97.	हिततम आहारविकार	222
98.	अहिततम आहारविकार	222
	विषवर्ग/ उपविषवर्ग	
99.	पञ्चमहाविष	223
100.	पञ्चोपविष	223
101.	उपविष	223

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
	पार्थिवद्रव्य (लवणवर्ग)	
102.	लवणद्वय	223
103.	त्रिलवण/लवणत्रय	224
104.	चतुर्लवण	224
105.	पञ्चलवण	224
106.	लवणषट्क	224
	क्षारवर्ग	225
107.	क्षारद्वय	225
108.	क्षारत्रय	225
109.	क्षारपञ्चक	225
110.	क्षारषट्क	226
111.	क्षारसप्तक	226
112.	क्षाराष्टक	226
113.	क्षारदशक	225
	जान्तवद्रव्यवर्ग	
114.	यमक और त्रिवृत	226
115.	महास्नेह	226
116.	स्नेहचतुष्टय	226
117.	पञ्चगव्य	226
118.	पञ्चामृत	227
119.	पञ्चसार	227
120.	शुक्लवर्ग	227
121.	पञ्चमूत्र	227
122.	मूत्राष्टक	227
123.	दशमूत्र	228

सप्तम् अध्याय – **विविधविषय** **229 - 380**

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	अग्र्यप्रकरण	229
2.	प्रतिनिधि द्रव्य	234
3.	औषध द्रव्यों में अपमिश्रण	238
4.	द्रव्यशोधन	246
5.	औषधमात्रा	253
6.	प्रमुख औषध द्रव्यों के भेद	255
7.	निष्कर्षक	261
8.	औषध द्रव्यों के प्रमाणित रासायनिक संकेतक (मार्कर)	271
9.	औषध द्रव्यों की भस्म-मात्रा और अम्ल में अविलेयता	281
10.	प्रयोज्यांग विशेष	288
11.	आकृति विशेष के आधार पर कार्यकारीद्रव्य	291
12.	कतिपय औषधद्रव्यों के प्रयोग	292
13.	आर्द्र एवं शुष्कावस्था में द्रव्यों के गुणधर्म	310
14.	नक्षत्र वृक्ष	317
15.	प्रमुख निघण्टु	320
16.	कतिपय द्रव्यों के नये वानस्पतिक नाम	322
17.	कार्बनिक पदार्थ की उपस्थिति का निर्धारण	325
18.	तैल का परीक्षण	328
19.	अकार्बनिक पदार्थों की उपस्थिति का निर्धारण	330
20.	क्रोमेटोग्राफी	333
21.	महाकषाय एवं गणों का तुलनात्मक विवेचन	340

संदर्भ ग्रन्थ सूची **381 – 385**